|| श्री सीतारामाभ्यान्नमः ||

महाप्रभु श्रीरामानन्द

★

रचयिता

श्री अभिरामदास जी

★

प्रथम संस्करण १०००]

[मूल्य ५० पैसे

समर्पण

परमादरणीय प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद, श्री रामानन्द सम्प्रदाय-

उत्थान परायण, भारतीय संस्कृति-रक्षा-दक्ष, सुर-सरस्वती

समुपासक, सेवा-समर्थ, वीतराग तपो निष्ठ, काशीस्थ

श्रीरामानन्द महाविद्यालय शंकुधारा-संचालक,

श्री१०८ श्री महान्त अवधविहारी दास जी

महाराज के युगल कर-कमलों में

यह 'महाप्रभु श्रीरामानन्द'

सादर समर्पित ।

॥ श्री सीतारामाभ्यान्नमः ॥

महाप्रभु श्रीरामानन्द

★

रचयिता

श्री अभिरामदास जी

★

प्रकाशक

श्री भागवतदास जी (रामायणी)

तपोवन आश्रम नक्खीघाट, काशी

प्रथम संस्करण १०००]

[मूल्य ५० पैसे

सेवा में दो शब्द

प्रिय पाठक महानुभाव !

'महाप्रभु श्री रामानन्द' नामक ग्रन्थ, जिसके रचयिता स्वामी श्री अभिरामदास जी शास्त्री, व्याकरण आचार्य साहित्य शास्त्री, स्थान अनटौर, पो० नबादा. जि० दरभंगा (मिथिला) सम्प्रति प्रबन्धक—आदर्श श्री रामानन्द महाविद्यालय शंकुधारा काशी हैं। इस पुस्तक का श्रवण जब हम लोग तपोवन आश्रम नक्खी घाट काशी मे किये, तो सब के सब आनन्द में विभोर हो गये। उसी समय मेरे श्री गुरुदेव जी की आज्ञा हुई कि इस पुस्तक का प्रकाशन आप कर दो। क्योंकि यह पुस्तक, है तो साधारण हिन्दी भाषा में; किन्तु इसके द्वारा श्री रामानन्द सम्प्रदाय के प्रचार में बहुत बड़ा सहयोग मिलेगा और इसको साधारण पढ़े-लिखे लोग भी गा-गा कर श्री राम प्रेम-पीयूष-पयोधि में गोता लगायेंगे।

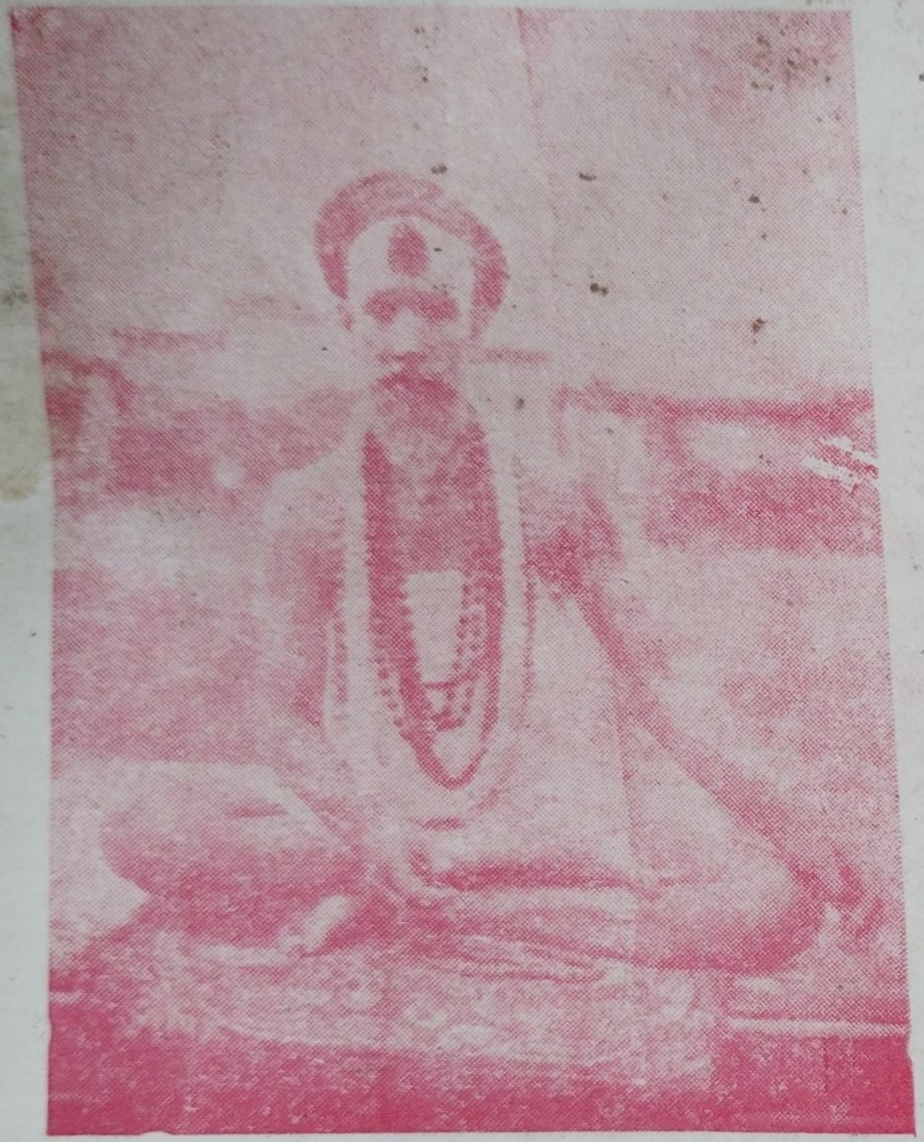
श्री गुरुदेवजी की आज्ञा पा मैंने श्री शास्त्रीजी से पूछा, उन्होंने सहर्ष प्रकाशन करने को मुझे स्वीकृति दी। मैं समझता हूँ कि यह पुस्तक देखने में तो छोटी है; किन्तु इसके अर्थ और भाव बड़े ही गम्भीर हैं। जब मैं इसे पढ़ता हूँ तो मुझे कविकुल कमल प्रभाकर श्री गोस्वामी जी की वह चौपाई स्मरण हो आती है 'अरथ अमित अति आखर थोरे'। इस पुस्तक में भगवान श्रीराम की भक्ति, देश-प्रेम और समाज-सेवा भाव की त्रिवेणी है। अतः ऐसे अनुपम ग्रन्थ को आप पाठक महानुभाव के हाथों में समर्पण करते मुझे अति हर्ष हो रहा है। आशा है इस पुस्तक को अपनाकर आप सज्जन, रचयिता और प्रकाशक के श्रम सार्थक करेंगे।

विनीत—

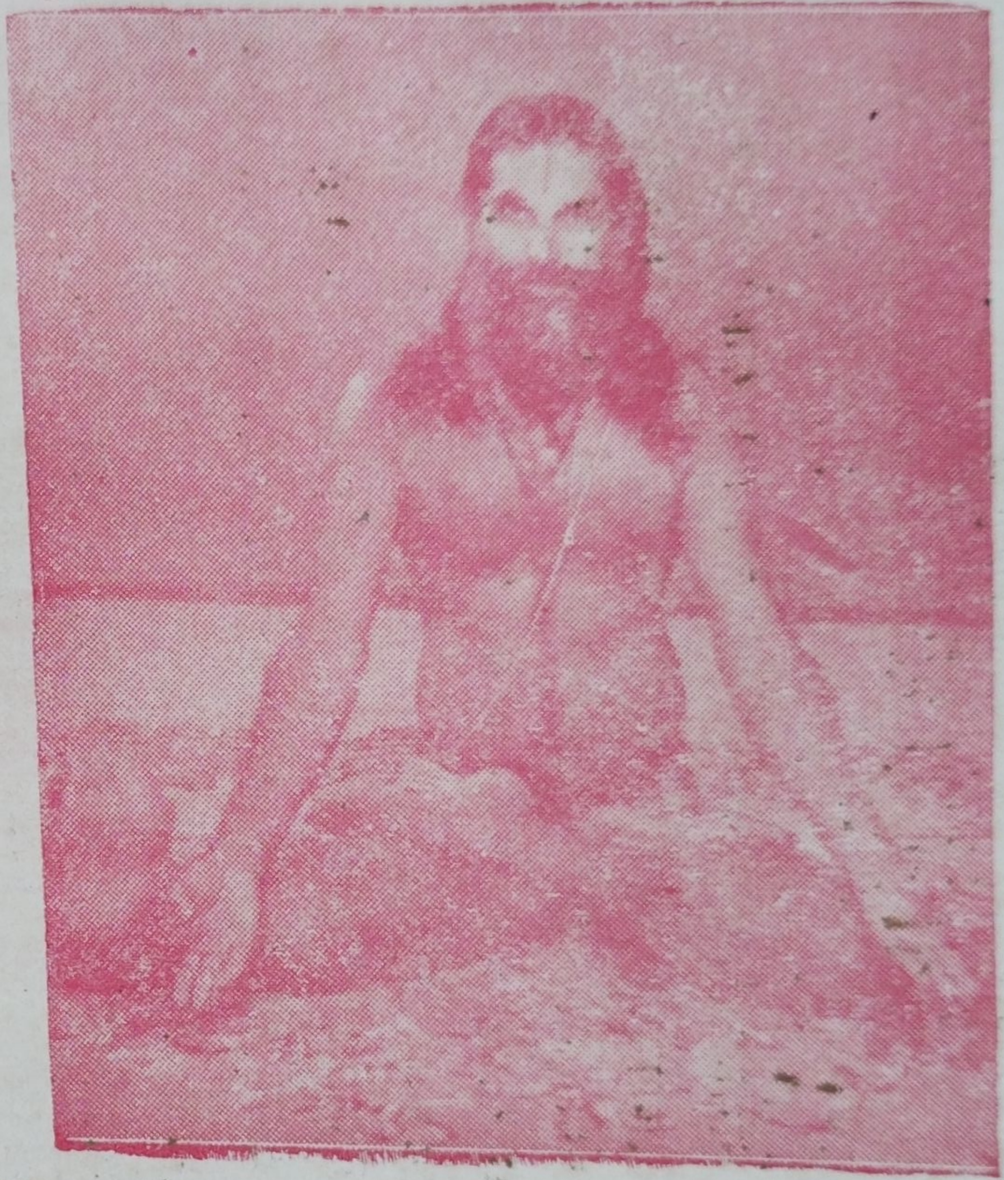
भागवतदास (रामायणी)

तपोवन आश्रम नक्खीघाट,

काशी।



श्रद्धेय महान्त श्री वासुदेवदास जी महाराज
संचालक तपोवन आश्रम नक्खी घाट काशी ।



वन्दनीय महान्त श्री अवधविहारीदास जी महाराज
संचालक आदर्श श्रीरामानन्द महाविद्यालय
शंकुधारा काशी ।

❋ महाप्रभु श्रीरामानन्द ❋



हिन्दु-धर्मोद्धारक पतित पावन महाप्रभु

जगद् गुरु श्री रामानन्दचार्य जी महाराज ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री सीतारामाभ्यान्नमः ॥

महाप्रभु श्रीरामानन्द

(मंगलाचरण)

गणपति गिरिजा-नन्दन ! होउ सहाइ ।
बनूँ कृतार्थ जगद्गुरु के गुण गाइ ॥१॥
बंदौ सीताराम-चरण सुख-धाम ।
पावउँ, जिनसे परम तत्व अभिराम ॥२॥

(अवतार-कारण)

जब जब जग में होता धर्म-विनाश ।
अरु हो जाता पाप-विचार-प्रकाश ॥३॥
सुजन-निकर जब होते दुखित महान ।
होते सुखी दुष्ट-जन अति बलवान ॥४॥
जिस कारण हो जाता शान्ति-अभाव ।
जहाँ तहाँ सब करते दुख वर्ताव ॥५॥
तब तब राम ब्रह्म धरि शुभ नर-देह ।

आते पावन करने बुध-जन-गेह ॥६॥
धर्म-स्थापन करि, हरते जनशोक ।
दुष्ट-दलन करते, गाते गुण लोक ॥७॥

(जन्म-स्थान)

पावन देश सुहावन, भारत वर्ष ।
ऋषि मुनि गाते जिनका गुण उत्कर्ष ॥८॥
उसी भूमि में पावन तीर्थ प्रयाग ।
किये जहाँ हैं आकर सुरमुनि याग ॥९॥
'पुण्य सदन' नामक ब्राह्मण थे एक ।
जिनके गुण गाते थे लोग अनेक ॥१०॥
पत्नी उनकी सती सुशीला नाम ।
था, जिनका सुखदायक शुभ सुख-धाम ॥११॥
दम्पति थे विद्वान नाम विख्यात ।
हरिजन-सेवा में थे रत दिन रात ॥१२॥
थे सम्पत्तिमान भी परम सुजान ।
'रहती धार्मिक निकट सदा सुख-खान' ॥१३॥
सब कुछ रहते हुये न थी सन्तान ।

उनको, जिस कारण वे थे अति म्लान ॥१४॥
एक दिवस दम्पति बैठे थे साथ।
किये विचार पुत्र-हित एक यथार्थ ॥१५॥
बोले पुण्य सदन शृण कान्ते ! बात।
पुत्र बिना सब वैभव व्यर्थ लखात ॥१६॥
बच्चा एक न घूमत जेहि घर माँझ।
दिवस रात अरु प्रातः सबदिन साँझ ॥१७॥
वह घर शून्य गृहस्थों के हित होत।
धन, बल भी शोभता लाभकर गोत ॥१८॥
सुनो सुशीला बिल्कुल होकर शान्त।
पुण्य सदन जी के यह शुभ वृत्तान्त ॥१९॥
किये विचार सुशीला पति के साथ।
दोनों हाथ जोड़कर बोली नाथ ! ॥२०॥
मन में दुःख न करिये सुनिये बात।
प्राणनाथ ! है शास्त्र आपको ज्ञात ॥२१॥
फिर क्यों होते शोक-मग्न हे कान्त।
'राम-भजन से होता सब दुख शान्त' ॥२२॥

उन्हीं प्रभू के करिये पूजन आज।
प्रेम-मग्न हो त्यागि सभी सुख-साज ॥२३॥
'होती जब प्रभु-कृपा तभी सब लोग।
करते हैं हरि-भजन त्यागि सुख-भोग' ॥२४॥
निज कान्ता की सुनि मीठी यह बात।
पराय सदन हो गये प्रफुल्लित गात ॥२५॥
कहने लगे जगत में हैं वे धन्य।
पत्नी जिनकी हरिजन है नहि अन्य ॥२६॥
वश अब क्या था दोनों मिलकर साथ।
तप-हित घर से निकले निजपुर-नाथ ॥२७॥
गये त्रिवेणी-तट जहँ सुन्दर नीर।
पहुँचे मन प्रसन्न हो दोनों धीर ॥२८॥
तप करना आरम्भ किये सुत-हेतु।
पति पत्नी दोनों मिलकर भव-सेतु ॥२९॥
राम नाम जप करते थे हर रोज।
राम मिलन क करते थे नित खोज ॥३०॥
देह-कार्श्य हो गया न तनु की कान्ति।

बढ़ती ही जाती थी मन में शान्ति ॥३१॥
उन दोनों की कठिन तपस्या देख।
होते थे सब चकित सुधीर विशेष ॥३२॥
कुछ ही दिन के बाद सुरेश्वर राम।
उनको दर्शन दिये भुवन-सुख-धाम ॥३३॥
मंगल-भवन–राम के दशन पाइ।
हुए बहुत आनन्द बरनि नहिं जाइ ॥३४॥
स्तुति करने वे लगे प्रेम से क्षिप्र।
थे गद्‌गद हो रहे सुशीला विप्र ॥३५॥

(स्तुति)

हे प्रभु दीन दयालु ! मुनीश्वर ! राम।
दया करो रघुनन्दन ! अब सुख-धाम ॥३६॥
माता पिता तुम्हीं हो सबके ईश !।
दयानिधे ! रघुनायक ! हे जगदीश ॥३७॥
तेरे बिना न जग में और सहाइ।
है, दुख-भंजन कोई सुख-हित भाइ ॥३८॥
आये हैं हम दोनों राम ! समीप।

इच्छा पूर्ति करो अब आज़ महीप ! ॥३९॥
दम्पति को स्तुति सुनकर राम दयालु ।
बोले द्विज ! बर माँगहु शीघ्र कृपालु ॥४०॥
हम प्रसन्न हैं तुम दोनों से आज ।
शीघ्र सहर्ष करा लो हमसे काज ॥४१॥
'भक्त-प्रेम-वश कितने हैं ये राम ।
शरणागत जन-हित करते सब काम ॥४२॥
बोले पुण्य सदन जी हे घनश्याम ।
मुझे चाहिये एक पुत्र श्रीराम ॥४३॥
जो हो आप सदृश ही जग-अभिराम ।
जनता भी पावे जिससे विश्राम ॥४४॥
सुनि प्रभु पुण्यसदन जी की यह बात ।
कहने लगे मनोहर जिनके गात ॥४५॥
अपने सदृश कहाँ मैं ढूढूँ जाइ ।
होव पुत्र मैं ही तब द्विज वर ! आइ ॥४६॥
कर्णामृत प्रभु-वाणी सुनि द्विज-श्रेष्ठ ।
कहने लगे सुनो हे राघव ! प्रेष्ठ ॥४७॥

आज धन्य मैं यह भी धन्या नारि।
हुई सुशीला पाकर कृपा तुम्हारि ॥४८॥
इतना सुनि प्रभु हुये सुअन्तर्धान।
ब्राह्मण दम्पति भी आये निज स्थान ॥४९॥
इधर सुलग्न सुतिथि पा श्री भगवान।
आये मातु सुशीला-गर्भ महान ॥५०॥
'जनहित करते सब कुछ राम कृपालु।
राम सदृश नहि जग मँह कोइ दयालु ॥५१॥
करते सबकी इच्छा पूर्ति रमेश।
रामचन्द्र रघुनन्दन जी परमेश ॥५२॥
जो जन आते इनके चरण-समीप।
बनते सत्य रंक से शीघ्र महीप' ॥५३॥
पुण्य सदन जो के पावन घर आज।
प्रकटे राम ब्रह्म करने शुभ काज ॥५४॥
आज प्रयाग-नगर में है अति हर्ष।
सब कहते हैं यह है मंगल वर्ष ॥५५॥
पुण्य सदन-मन आनन्द कहि नहि जाइ।

नर नारी शिशु देखन आवहिं जाइ ॥५६॥
सकल कहहि यह बालक परम सुरूप।
है सौन्दर्य-निधान सुरम्य अनूप ॥५७॥
सती सुशीला-मन में परम हुलास।
होता है निज सुत को देखि प्रकाश ॥५८॥
कहती है मनही मन राम उदार।
हैं वे किये, बहुत ही मम उपकार ॥५९॥
अज अविनाशी होकर भी मम गेह।
प्रकट भये धरि सुन्दर मानव-देह ॥६०॥
देखि स्व-सुत को पुण्य सदन जी धीर।
हुए अतीव प्रसन्न सुद्विज-कुल-वीर ॥६१॥
गुणी विप्र को तुरत बुलाये शान्त।
आये द्विज दैवज्ञ मनोहर दान्त ॥६२॥
देखि अलौकिक शिशु को तब भू-देव।
बोले ये हैं जग में सुर-नर-देव ॥६३॥
जगत-जनन-हित जो हैं 'आनंद-कन्द'।
अतः नाम हो इनका 'रामानन्द' ॥६४॥

राम-युक्त आनन्द नाम सुख-खान ।
निज सुतके सुनि हुए सुखी मतिमान ॥६५॥
पुण्य मदन जी विप्र, सुशीला-कान्त ।
मन ही मन हो गये तुरत वे शान्त ॥६६॥
बाल चरित करते थे अति आनन्द ।
जननी जनक-मोद-हित रामानन्द ॥६७॥
सकल प्रयाग-निवासी बाल-चरित्र ।
होते थे सब देखि अतीव पवित्र ॥६८॥
बड़े हुये जब कुछ प्रभु रामानन्द ।
सकल सुखद विभु सत चित आनंदकन्द ॥६९॥
दिये जनेऊ पिता उन्हें सानन्द ।
पुण्यसदन-घर हुआ महा आनन्द ॥७०॥
आये थे पुरवासी लोग अनन्त ।
कहते थे सब पुण्यसदन हैं सन्त ॥७१॥
हुआ जनेऊ-यज्ञ सफल तत्काल ।
देखि गये निज गृह को सभी स-बाल ॥७२॥
इधर सुशीला वल्लभ कृत-उपकार ।
पुण्यसदन जी मनमें किये विचार ॥७३॥

रामानन्द पढ़े अब काशी जाय।
रहते जहाँ सर्वदा बुध-समुदाय ॥७४॥
शिशु-काशी-यात्रा सुनि भयउ उदास।
मातु सुशीला केहि बिधि करउँ प्रकाश ॥७५॥
दुखी देखि माता को रामानन्द।
किये धर्म–उपदेश सच्चिदानन्द ॥७६॥
तुम रोवहु जनि जननी ! करहु विचार।
है नहि कोइ किसी का एहि संसार ॥७७॥
राम-ब्रह्म का स्मरण करहु तुम नित्य।
वही एक है अपना सबके सत्य ॥७८॥
सुत-वित्त, जननी, जनक, मित्र अरु भाइ।
अन्त न कोई इनमें होत सहाइ ॥७९॥
'परम सहायक सबके केवल राम।
है इस जग में सुनहु लोक–अभिराम' ॥८०॥
निज सुत की कर्ण प्रिय सुनि यह उक्ति।
उपजी मातु सुशीला के मन भक्ति ॥८१॥
करि हरि-स्मरण कहेउ निज सुत को जाउ।
काशी में पढ़ि पुनः शीघ्र घर आउ ॥८२॥

जननी-आज्ञा लेकर रामानन्द ।
चले पिता के साथ बने निर्द्वन्द ॥८३॥
कहते हुए मार्ग में प्रभु-गुण-ग्राम ।
पहुँचे दोनों काशी-विद्या-धाम ॥८४॥
'पंच-गंग तट' पर करिके विश्राम ।
स्नानोत्तर मिलि किये स्मरण हरिनाम ॥८५॥
श्री राघवानन्द जी थे मुनि पाल ।
वहीं बनाकर कुटी सुखद सुविशाल ॥८६॥
करते थे उपदेश सबों को आर्य ।
श्री राघवानन्द जो धर्माचार्य ॥८७॥
श्री बोधायन–रचित–वृत्ति सुखदाइ ।
सुनहि सुधीर समूह जहाँ मन लाइ ॥८८॥
पुराय सदन जी पहुँचे तत्क्षण तत्र ।
होता था जिस जगह सुविद्या-सत्र ॥८९॥
बठे वहाँ श्रवण-हित विप्र स-पुत्र ।
सुने बहुत से उसमें दर्शन–सूत्र ॥९०॥
मिले विप्र आचार्य-वर्य से जाइ ।
दोनों के शुभ मिलन वरनि नहिं जाइ ॥९१॥

बोले पण्यसदन जी भृगु आचार्य ! ।
करैं आप मेरा भी पावन कार्य ॥९२॥
देता हूँ निज पत्र आप को नाथ ! ।
उन्हें पढ़ाकर करिये मुझे सनाथ ॥९३॥
विद्या हो है धन ब्राह्मण के देव ! ।
है सर्वथा आप में वह भू-देव ! ॥९४॥
सुनि ब्राह्मण-वाणी राघव आनन्द ।
कहे सुनहुँ तव सुत यह रामानन्द ॥९५॥
होनहार है आया है मम पास ।
पूरो होगो निश्चय तव मन-आश ॥९६॥
इसके लक्षण से होता है ज्ञान ।
होगा यह निश्चय कोई मतिमान ॥९७॥
इतनी सुन राघव आनँद की बात ।
पुण्यसदन के हृदय न हर्ष समात ॥९८॥
'पर मुख से सुत-गुण-गण सुनि निजकान।
को न हर्ष युत होहिं जगत मति मान' ॥९९॥
पराय-सदन यह कह कर गये स्व-गेह ।
रोक रहा था जाने से सुत-नेह ॥१००॥

इधर राघवानन्द-सदन द्विज-सूनु ।
रहने लगे सकल-जन-पंकज-भानु ॥१०१॥
सकल-लोक आनन्द-द रामानन्द ।
रह कर पढ़ने लगे सच्चिदानन्द ॥१०२॥
अल्पकाल हो में सब विद्या प्राप्त ।
पढ़ कर किये लोक-मंगल-कर आप्त ॥१०३॥
होने लगा ख्याति इन की चहुँ ओर ।
श्री रामानँद पूज्य मचो यह सोर ॥१०४॥
श्रीराघव-आनन्द सुधी - जन-जान ।
हंते थे सुनि मुदित शिष्य-गुण-गान ॥१०५॥
'गुरु-गण शिष्य-प्रशंसा सुनि निज-कान ।
होहिं हर्ष-युत को न बात यह जान' ॥१०६॥
उधर प्रयाग नगर में नित उठि दान ।
मातु सुशोला करहिं सहित सम्मान ॥१०७॥
चिर जोवहु रामानँद मम सन्तान ।
होउ लोकमहँ पूजित परम सुजान ॥१०८॥
काशो से कोउ आवत यदि तेहि गाम ।
धाइ जाइ तेहि पूछति कहु सुत-नाम ॥१०९॥

कहहि समागत सज्जन सुत प्रख्याति ।
मातु सुशीला सुनि सुनि अति हर्षाति ॥११०॥
इधर सुशीला पति सज्जन-वर विप्र ।
पुण्य सदन काशो से आये क्षिप्र ॥१११॥
देखि समागत-पति रामानन्द माइ ।
हुई प्रसन्न अतिशय कहि नहिं जाइ ॥११२॥
निजकर कमलन्हि लय जल धोई पाँय ।
पति-व्रता पति-सुर के प्रथमहि जाय ॥११३॥
भोजन मधुर हित-प्रद द्रुत करवाइ ।
प्राणोपम-सुत-मंगल पूछी जाइ ॥११४॥
द्विज-कुल-कुमुद-सुधाकर पावन-नाम ।
पुण्य सदन सब भाषेउ सुत-गुण ग्राम ॥११५॥
पति मुखसे सुनि प्रिय-सुत-शुभ-वृत्तान्त ।
भयउ सुशीला मानस सत्वर शान्त ॥११६॥
इसी भाँति बीते कुछ सुख—युत वर्ष ।
धर्म-प्राण दम्पति का लोकोत्कर्ष ॥११७॥
काशी में रामानन्द की प्रख्याति ।
होने लगी सकल घर दिन अरु राति ॥११८॥

पुण्य सदन जो मन में किये विचार ।
लावैं रामानन्द को अब निज द्वार ॥११९॥
त्यागि प्रथम आश्रम अब वह स्वीकार ।
करे गृहस्थाश्रम का हो उपकार ॥१२०॥
चले पुनः काशी को तुरत द्विजेश ।
करते हुये स्मरण पद-कमल रमेश ॥१२१॥
गये राघवानन्द – मुनीश्वर – थान ।
गंगा–तट पर जो था बना महान ॥१२२॥
देखि विप्र को श्री राघव–आनन्द ।
हुए विपुल·बुध·वन्दित अति सानंद ॥१२३॥
पुण्य सदन पति-वर को किये प्रणाम ।
पावन-पद-पंकज धरि कहि निज नाम ॥१२४॥
रामानंद तुरत गुरु आज्ञा पाइ ।
किये प्रणाम जनक-पद शीश नवाइ ॥१२५॥
देखि पुत्र को करते हुये प्रणाम ।
स्नेह·सिंधु·संमग्न हुये गुण·धाम ॥१२६॥
विद्या-विनय रूपबल, वैभव-युक्त ।
निरखि स्वसुत को द्विज-वर बोले युक्त ॥१२७॥

आया हूँ अब लेने तुमको तात।
चलहु प्रयाग यहाँ से होते प्रात ॥१२८॥
इतना कहि भू-सुर आसन-आसीन।
हुए, किये विश्राम सुधर्म प्रवीण ॥१२९॥
प्रातकाल होते ही द्विजवर स्नान।
करके किये रामपद पंकज ध्यान ॥१३०॥
रामानंद चलहु अब निज आगार।
होउ सदार वहाँ जा स-व्यवहार ॥१३१॥
आश्रम प्रथम त्यागि अब करहु प्रवेश।
सुखद गृहस्थाश्रम में हे छात्रेश ॥१३२॥
'आश्रमादाश्रमंगच्छेत्' व्यवहार।
है यह स्मृति-निर्णीत-मार्ग-व्याहार ॥१३३॥
बोले रामानंद सुनहु हे तात।
'गृहं वनं वा प्रविशेत्' यह भी बात ॥१३४॥
लिखी हुई भागवत-मध्य है आय।
अतः नहीं अच्छा लगता गृह कार्य ॥१३५॥
जब से हो वैराग्य तभी से त्याग-।
करे जागतिक-सुख का हो वर भाग ॥१३६॥

आजीवन विरक्त रह कर मैं आर्य।
सदा करूँगा जनता-मंगल कार्य ॥१३७॥
सुनि यह रामानन्द-सुवचन आकट्य।
बोले पुण्य सदनजी सुन्दर वाक्य ॥१३८॥
धन्य तुम्हारा जीवन होगा तात।
जो तुम्हरे मन जन-हित कार्य लखात ॥१३९॥
इतना कहि निज सुत को पुण्याऽऽगार।
गये राघवानन्द समीप उदार ॥१४०॥
श्री राघवानन्द से बोले आइ।
रामानन्द-पिता जी पद शिर नाइ ॥१४१॥
देहु नाथ अस आज्ञा सुत घर जाइ।
करे विवाह-कार्य गुरु-देव मनाइ ॥१४२॥
कहे राघवानन्द सुनो हे धीर।
पुत्र बनेगा तव यह मानव-वीर ॥१४३॥
हठ न करहु तुम इनसे निज गृह-हेतु।
जन-हित होगा यह दुख-वारिधि-सेतु ॥१४४॥
निज सुत-गुरु-मुख सुनि कर्ण-प्रिय बात।
हुए सुखी श्री पुण्यसदन अभिजात ॥१४५॥

करि प्रणाम राघव आनँद को विप्र ।
ले प्रणाम सुत का गे निज गृह क्षिप्र ॥१४६॥
खबर सुनाई निज जाया को जाइ ।
सुनि मूर्छित-सी हुई सुशीला माइ ॥१४७॥
पुण्य सदन जी किये बहुत उपदेश ।
हुई प्रसन्ना सुनि उदन्त हृदयेश ॥१४८॥
रामानन्द कुशल हैं निज गुरु पास ।
हुआ गुणी, जन करते उसकी आश ॥१४९॥
हम दोनों भी हुए धन्य सुत पाइ ।
रामानन्द सदृश इस जग में आइ ॥१५०॥
करें भजन प्रभु के ही अब हम नित्य ।
जायें गे साकेत बात यह सत्य ॥१५१॥
'सकल कामना पूरण करते राम ।
निज जन के सर्वदा जगत–अभिराम' ॥१५२॥
आजीवन कहते हरिगुण मतिमान ।
दोनों गये राम–पुर तन अवसान ॥१५३॥
'होती कृपा राम की जिन पर भाइ ।
करते उनके ऊपर सदा सहाइ' ॥१५४॥

'राम–शरण जों होंगे होइ विशोक।
उनका जग यश होगा शुभ परलोक' ॥१५५॥
इधर चरित्र किये जो रामानन्द।
सुनिये जो है सत चित आनँद कन्द ॥१५६॥
श्रीराघवानन्द जो से ले मन्त्र।
हुए विरक्त सुखद सब तन्त्र स्वतन्त्र ॥१५७॥
गुरु-आज्ञा से रामानन्द सुजान।
भारत-तीर्थ-भ्रमण-हित किये पयान ॥१६८॥
जहाँ तहाँ करते थे धर्म प्रचार।
होता था मानब का बर उपकार ॥१५९॥
इनके सुन्दर–भाषण सुनकर एक।
हुये मार्ग में पण्डित शिष्य अनेक ॥१६०॥
जिनमें से कुछ हुये सुयोग्य विरक्त।
राम-ब्रह्म-चिन्तन में थे अनुरक्त ॥१६१॥
उनमें से कुछ जन के हैं ये नाम।
जगत शोक–सन्तप्त–लोक – विश्राम ॥१६२॥
सुर-सुर, भावानन्द, अनन्तानन्द।
नरहरि और कबीर, गालवानन्द ॥१६३॥

रमादास, अरु पीपा, योगानन्द ।
धना, सेन, ये दोनों सुख आनन्द ॥१६४॥
थे प्रधान ये इनके द्वादश शिष्य ।
जिनके हैं अब भो मतिमान प्रशिष्य ॥१६५॥
इन मण्डलियों से युत होकर राम-
रामानंद गये शुभ चारो धाम ॥१६६॥
बदरीनाथ, द्वारका, श्री जगनाथ ।
सकल भुवन सुख-दायक श्री रँगनाथ ॥१६७॥
धर्म-प्रचार-प्रसार किये गुण-धाम ।
रामानन्दाचार्य लोक-अभिराम ॥१६८॥
नास्तिक-मत खण्डन करि किये प्रचार ।
आस्तिक मत का जो है सुख-दातार ॥१६९॥
किये बहुत शास्त्रार्थ जगत-हित विष्णु ।
रामानंदाचार्य वैरि-जन-जिष्णु ॥१७०॥
लिखे लोक हित सुन्दर आनँद भाष्य ।
जिस को सुनि बुध बोले होहु प्रकाश्य॥१७१॥
जिसकी विषय-वस्तु सुनि जन सानंद ।
कहते धन्य धन्य हैं रामानन्द ॥१७२॥

'वैष्णवमताब्ज भास्कर' भी शुभ ग्रन्थ ।
लिखे जगत हित सुन्दर पावन पन्थ ॥१७३॥
'करते हैं भगवान लोक हित काज ।
जन-रक्षण हित धरते हैं सब साज' ॥१७४॥
रामानन्द राम-सम थे जन-पाल ।
शरणागत नर जिनसे हुये निहाल ॥१७५॥
एक बार कोई द्विज अपने ओक ।
हरि की पूजा किये छाड़ि सब शोक ॥१७६॥
प्रभु पूजन में शंख बजाया विप्र ।
आया उन्हें मारने मुसलिम क्षिप्र ॥१७७॥
कहा उन्हें क्यों विप्र ! बजाया शंख ।
नहीं जानता हमको तुम निःशंक ॥१७८॥
अभी मारता हूँ मैं तुमको दुष्ट ! ।
जिससे होंगे बादशाह सन्तुष्ट ॥१७९॥
इतने में आ गया यवन बहु तत्र ।
ले मारने चला, था, मस्जिद यत्र ॥१८०॥
कहने लगा, यवन करदो, द्विज-कत्ल ।
रह न सकेगा, जिससे इसका शक्ल ॥१८१॥

यह सुनकर घबराया ब्राह्मण भक्त ।
सोचा, क्या कर सकता हूँ इस वक्त ? ॥१८२॥
स्मरण किया रामानँद का वह विप्र ।
मस्जिद में भर गया शंख बहु क्षिप्र ॥१८३॥
लगे बोलने सभी शंख हो एक ।
शब्द हुआ प्राणान्तक सुने अनेक ॥१८४॥
सभी यवन हो गये बधिर तत्काल ।
कोई दुष्ट न जान सका वह हाल ॥१८५॥
नहीं किसी का कोई सुनता शब्द ।
वाणी भी प्रभु सबकी कर दी जब्द ॥१८६॥
मुल्ला से जा पूछे मुस्लिम लोग ।
हुआ कहहु क्यों यहाँ अजब संयोग ॥१८७॥
हैं कबीर–गुरु रामानन्द सुजान ।
करामात है उनकी ही यह जान ॥१८८॥
कहा मौलवी सुनहु विचार हमार ।
ले कबीर को साथ जाहु दरबार ॥१८९॥
रामानन्द महा प्रभु के तुम लोग ।
होगा दूर तभी तब दुःसंयोग ॥१९०॥

सुन कर गये सभा कबीर के साथ ।
रामानन्द जहाँ थे योगी–नाथ ॥१९१॥
बोले श्री कबीर गुरु से सरकार ! ।
आए हैं हमलोग आपके द्वार ॥१९२॥
इनके दुःख करैं अब दूर उदार ! ।
आज्ञा भी देवें ये हों उद्धार ॥१९३॥
सुन कर बोले वाणी परम सुजान ।
जगद्गुरु श्रीरामानँद भगवान ॥१९४॥
सर्व प्रथम तुम द्विज को देहु निकाल ।
मस्जिद से सब होंगे तभी निहाल ॥१९५॥
मस्जिद भी दो छोड़, सभी तुम आज ।
होगा तभी तुम्हारा, मंगल काज ॥१९६॥
किया यवन तब, गुरु वाणी स्वीकार ।
हुआ सबों का विघ्नों से उद्धार ॥१९७॥
ब्राह्मण को सब मुस्लिम किया सलाम ।
पहुँचाये सब मिल उनको निज धाम ॥१९८॥
मस्जिद भी हो गया राम-आगार ।
उस दिन से वर हुआ हिन्दु-उपकार ॥१९९॥

रामानंद महाप्रभु योगी राज।
इसी तरह बहु किये भक्त गण काज ॥२००॥
हिंदू-धर्म-विरोधी जो थे अन्य।
बादशाह यवनों के पतित जघन्य ॥२०१॥
उनमें से ये जन थे परम प्रधान,
करते थे जो हिंदु-धर्म को म्लान ॥२०२॥
बलवन, महमद गोरी और फिरोज।
कैकुवाद, तुगलक, कुतुबूदिन ओज ॥२०३॥
सबके सब ये हुए परास्त महान।
जगद्गुरु रामानँद से गुणवान ॥२०४॥
एक दिवस आये आचार्य-समीप।
सदुपदेश को सुनने यवन महीप ॥२०५॥
रामानँद-वाणी सुनि सब कृत कृत्य।
यवन-नृपति-गण हुये सदा कृत सत्य ॥२०६॥
जाते समय बादशा बोले जाइ।
रामानन्द-महा-प्रभु-पद-शिर नाइ ॥२०७॥
कुछ आज्ञा अपनी प्रभु हमको देहु।
फल स्वरूप उसके जग-गुरु कुछ लेहु ॥२०८॥

बोले रामानन्द, सुनहु तुम लोग।
सबसे मिलकर रहहु, छाड़ि सब भोग ॥२०९॥
किसी धर्म के साथ न करहु विरोध।
है यह मेरा सब के लिये प्रबोध ॥२१०॥
मुझको द वश यही अन्य कुछ नाहि।
मिलता सब को सभी एकता माहि ॥२११॥
रामानन्दाचार्य-वचन सुनि कान।
वादशाह-गण हुए प्रसन्न महान ॥२१२॥
रामानन्द जगद्गुरु, के गुण गान।
करते हुए गये सब, अपने स्थान ॥२१३॥
सब तीर्थों से आकर परम प्रकाश।
करने लगे जगद्गुरु काशी-वास ॥२१४॥
करते थे उपदेश सुखद हर रोज।
सुनने जनता आती थी कर खोज ॥२१५॥
एक बार काशी कहँ जीतन-हेतु।
पंडित-मानी आयउ कोउ कुल-केतु ॥२१६॥
सुना जगद्गुरु की वह पावन कीर्ति।
सोचा, किस विधि हो उनकी अपकीर्ति ॥२१७॥

इतने में वह पहुँचा जग-गुरु-द्वार ।
जहाँ लगा था शिष्यों का दरबार ॥२१८॥
रामानन्दाचार्य गये सब जान ।
अन्तर्यामी हैं वे कृपा–निधान ॥२१९॥
प्रथम द्वार पर भेंटेउ पीपा आइ ।
कहाँ जाहुगे विप्र ! कहे शिर नाइ ॥२२०॥
बोला विप्र जायँगे हम शास्त्रार्थ- ।
करने तव गुरु–वर से अभी यथार्थ ॥२२१॥
बोले पीपा बुध को सुनि यह बात ।
करैं प्रथम शास्त्रार्थ हमीं से भ्रात ॥२२२॥
पीछे मम गुरु-वर से करना बात ।
क्योंकि आप हैं जग में वर प्रख्यात ॥२२३॥
श्री पीपा की यह वाणी सुनि क्रुद्ध ।
हुए विप्र जिन का था हृदय अशुद्ध ॥२२४॥
बोले पंडित करो शीघ्र शास्त्रार्थ ।
तुम अब हमसे निज गुरु-देव-सुखार्थ ॥२२५॥
होने लगा धराधर उन में वाद ।
था न किसी का न्यूनाधिक्य विवाद ॥२२६॥

आकर देख रही थी जनता तत्र ।
होता था शास्त्रार्थ उभय में यत्र ॥२२७॥
किन्तु न ठहर सके, पंडित कुछ काल ।
चिन्ता-जनक हुआ झट उनका हाल ॥२२८॥
पीपा के सुनि युक्ति-पूर्ण व्याहार ।
मान लिये तब पंडित अपनो हार ॥२२९॥
'राम–भक्त से जग में कोई जीत– ।
सकता नहीं, नियम यह मानहु मीत !' ॥२३०॥
'जेहि पर कृपा करहि, रघुनन्दन राम ।
तेहि उर बसहि शारदा, आठो याम' ॥२३१॥
हारा हुआ विप्र तब, गयउ स-शोक ।
रामानन्द जगद्गुरु जी के ओक ॥२३२॥
चरण नाइ करि बोले यति वर! आज ।
देहु परम उपदेश, करहु मम काज ॥२३३॥
देख आपको होता है मम स्वान्त ।
रामानन्दाचार्य ! दयालो ! शान्त ॥२३४॥
सुनि प्रभु रामानन्द विप्र–आदेश ।
किये उन्हें तब राम-मन्त्र उपदेश ॥२३५॥

निरभिमान हो तब वह विप्र उदार ।
किये जगत में बहु जन के उपकार ॥२३६॥
इसी तरह राखे काशी के मान ।
रामानन्द अनेक बार भगवान ॥२३७॥
काशी वासी भी रामानँद पाइ ।
रहते थे अति सुखी सदा मन लाइ ॥२३८॥
एक दिवस गुरुवर श्रीरामानन्द ।
किये अमित उपदेश शिष्य-उडु-चंद ॥२३९॥
बैठे थे नर नारी गण तत्काल ।
सुनने को गुरु-वाणी परम रसाल ॥२४०॥
बोले रामानन्द पूज्य भगवान ।
राम कथा है सबके हित सुख-खान ॥२४१॥
सुनो सभी तन मन से 'पर उपकार- ।
करना ही है श्रेष्ठ धर्म श्रुति सार' ॥२४२॥
'दुखियों को सुख देना, करना धर्म ।
है मनुष्य के लिये यही शुभ कर्म' ॥२४३॥
'पर नारी को माता–सम जो जान ।
वही जगत में है गुणवान सुजान' ॥२४४॥

'सब इन्द्रिय को राखे वश में जोइ ।
सकल विश्व में वन्दित सो नर होइ' ॥२४५॥
है समस्त संसार राम में जानु ।
यथा बीज में वृक्ष रहे यह मानु' ॥२४६॥
'राम-भक्ति में है, सब का अधिकार ।
होगा सबका इससे ही उद्धार' ॥२४७॥
'राम ब्रह्म व्यापक है, जग है व्याप्य ।
जापक है सब जीव, राम हैं जाप्य' ॥२४८॥
लक्ष्मण सीता सहित राम का ध्यान ।
है मनुष्य के लिये सकल सुख-खान ॥२४९॥
सब देशों से बढ़ कर भारत वर्ष ।
गाते हैं सुर इस की कीर्ति प्रकर्ष ॥२५०॥
राम कृष्ण भी लिये जहाँ अवतार ।
जहाँ बह रही गंगा यमुना धार ॥२५१॥
प म पवित्र अयोध्या, मिथिला धाम ।
सरयू, कमला धारा जहाँ ललाम ॥२५२॥
उस का सेवन, रक्षण भी कर्तव्य ।
है मानव के लिये सतत स्मर्तव्य ॥२५३॥

इसी तरह पावन, सुखकर उपदेश।
किये जगद्गुरु रामानन्द जनेश ॥२५४॥
हो कृत-कृत्य गये सब निज निज गेह।
रामानन्द-चरण में रखते नेह ॥२५५॥
तब कुछ दिन के बाद दयालु उदार।
रामानन्दाचार्य जगत आधार ॥२५६॥
साधुजनों को प्रभु करके निःशोक।
रामानन्द जगद्गुरु गे निज लोक ॥२५७॥
करते जिनके पावन गुण गण गान।
यहाँ आज भी मानव-वृन्द सुजान ॥२५८॥
हैं जिनके अनुयायी–गण भी आज।
सारे भारत में फैले कृत काज ॥२५९॥
उनका पावन सुखकर चरित ललाम।
हिन्दी-भाषा-बद्ध लिखा अभिराम ॥२६०॥
है इसमें सुखदायक 'बरवा' छन्द।
देगा जो सबको सुख, सदा अमंद ॥२६१॥
पाठ करेंगे इसका जो निःकाम!
उनकी इच्छा पूर्ति करेंगे राम ॥२६२॥

पुस्तक रचना काल

रचे गगन दल सुरपथ लोचन वर्ष।
पौष धवल शिव तिथि अभिराम सहर्ष ॥२६३॥

॥ श्री सीतारामार्पणमस्तु ॥

पुस्तक रचना स्थान

वन्दनीय द्वारका धीश भगवान।
काशी स्थित शंकूधारा शुभ स्थान ॥ १ ॥
रामानन्द महा विद्यालय शान्त।
पढ़ते जहाँ छात्र गण बन कर दान्त ॥ २ ॥
मनीराम हैं संरक्षक शुभ नाम।
उपर्युक्त विद्यालय के गुण-धाम ॥ ३ ॥
रहता मैं भी वहीं हृदय धरि राम।
करता हूँ विद्यालय का कुछ काम ॥ ४ ॥
आये थे हम गुण विधु सुरपथ नेत्र।
वत्सर में अभिराम दास द्विज अत्र ॥ ५ ॥
रहते मुझ को हुए यहाँ ऋषि वर्ष।
जाऊँगा अब मैं अन्यत्र सहर्ष ॥ ६ ॥

॥ जै श्रीराम ॥

कैलाश प्रेस, सोनारपुर वाराणसी।

सम्मतिः—

'महाप्रभु श्री रामानन्द' नामक प्रसाद गुणोपेत खण्डकाव्य का निर्माण कर पं० श्री अभिरामदास जी ने न केवल श्री-वैष्णवों का ही उपकार किया है, अपितु जीवमात्र के उद्धारक आचार्य श्री रामानन्द ऐसे महापुरुष विषयक मनोहर रचना से हिन्दी साहित्य जगत की प्रशंसनीय सेवा की है। अतः इसके प्रचार प्रसार से मानवमात्र में सद्भावना बढ़ेगी।

स्वामि वासुदेवाचार्यः
प्राध्यापक
विशिष्टाद्वैत वेदान्त विभाग
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी।
११-१-६२

पुस्तकसमालोचना

'महाप्रभु श्री रामानन्द' संज्ञक पुस्तक, जिसके लेखक श्री अभिरामदास जी व्याकरणाचार्य साहित्य शास्त्री, प्रबन्धक आदर्श श्री रामानन्द महाविद्यालय शंकुधारा काशी हैं। मैंने इसके कतिपय स्थलों का श्रवण किया। सूक्ष्म रूप में श्री परमाचार्य जी के चरितों का जो हिन्दी के बरवा छन्दों में रची गई है। इस का चित्रण मनोरम रूप में किया गया है। साथ ही साथ आचार्य-पाद के रचित ग्रन्थों का भी परिचय दिया गया है और उनकी यश-आवलियो का आपने सफल चित्रण किया है। आशा है कि श्रीरामानन्दीय श्री वैष्णवों में तथा समस्त विज्ञजनों में इस का विशेष प्रचार-प्रसार होगा।

विनीत—
श्रीकान्तशरण
सद्गुरु कुटी, गोलाघाट,
श्री अयोध्या जी।
११-२-६४ ई०

प्रशस्ति

'महाप्रभु श्रीरामानन्द" नामक इस लघु काय पुस्तक का यत्रतत्र अवलोकन कर हमें इतना अधिक आनन्द प्राप्त हुआ कि यद्यपि एतदर्थ निम्नांकित लेखक महानुभाव के लिये कितनी प्रशंसा एवं कितना धन्यवाद दिया जाय ऐसी हमारी वाक् शक्ति नहीं—तथापि निजी अभिलाषा का संवरण करना भी सर्वथा असंभव ही है। अतः कहना पड़ता है कि इस पुस्तक का प्रणयन कर पण्डित स्वामि श्री अभिरामदास जी महाराज, व्याकरणाचार्य साहित्य शास्त्री, श्री राम-जानकी मन्दिर अनटौर, पो० नवादा, जि० दरभंगा (बिहार) सम्प्रति प्रबन्धक आदर्श श्रीरामानन्द महाविद्यालय शंकुधारा, वाराणसी—२ महोदय ने लघुवयस्क होकर भी इस पुस्तक में ऐसी युक्ति, ऐसा ललित शब्द विन्यास, तथा ऐसे अपूर्व आचार्य परिचयात्मक विषयों का स्थापन कर 'गागर में सागर' भरने की उक्ति के साथ साथ—

'रवि-मंडल देखत लघु लागा।
उदय तासु त्रिभुवन तम भागा॥'

इस उक्ति की सार्थकता भी पूर्ण मात्रा में की है।

अतः हम 'परात्पर तर तत्त्वात्मक श्रीराम की परमैकान्तिकीय भक्ति के प्रचारकाचार्य जगद् गुरु श्री रामानन्दाचार्य' के अनुयायी श्री श्री-वैष्णवों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि इस लघुकाय ग्रन्थ का प्रचार-प्रसार में पूर्ण रूपेण दत्तचित्त हो, इन लेखक महाशय के परिश्रम को सर्वथा सफलीभूत करें।

स्वामी रामलक्ष्मणाचार्यः

संस्थापकः—

श्री काशी विद्या मन्दिर

डी० ४२/२०२ मिश्रपोखरा, वाराणसी।

३१-१२-६३ ई०

श्री अभिरामदास जी द्वारा रचित पुस्तकें

१—श्री रामानन्द चरितम (हिन्दी अनुवाद सहितम्) मू० ३१ पै०

२—प्रिय पुकार (हिन्दी) ३१ पै०

३—तीर्थ यात्रा ,, २५ पै०

४—प्रियतम-प्रार्थना (मैथिली) ३१ पै०

५—गंगा-गुण-गान ,, २५ पै०

६—मनोबोध तैंतीसा ,, १० पै०

७—महादेव-स्तुति ,, ० पै०

८—हमारा कर्तव्य (राष्ट्र-भक्ति-भाव-पूर्ण) हिन्दी १० पै०

९—श्री शंकर स्तुति (हिन्दी पद्य) २५ पै०

१०—श्री सीतारामादि पञ्चस्तवी (संस्कृत) १० पै०

११—श्रीरामानन्द पञ्चस्तवी ५ पै०

१२—करूणाशतकम् (संस्कृतम्) (अ प्रकाशित)

१३—श्री वैद्यनाथस्तोत्रम् ,, ,,

१४—महाप्रभु श्रीरामानन्द (हिन्दी पद्य) ५० पै०

पुस्तक प्राप्तिस्थान—

१—श्री भागवतदास जी (रामायणी) तपोवन आश्रम नक्खी घाट (वाराणसी-कैंटोमेंट)

२—आदर्श श्रीरामानन्द महाविद्यालय शंकुधारा वाराणसी-३

३—श्री रामजानकी मंदिर वसुका जि० गाजीपुर (यु० पी०)

★